नन्दीपति गीतिमाला

१

गौरी-पूजा

गिरिजा पूजय चलु[1] बाला
देथु अभयवर मदन गोपाला[2]
गोमतीक तट[3] लसु[4] फुलवारी
से फुल तोड़थि राजकुमारी
बाटी भरि चानन करपूर[5] तमोल
गौरिहि दय रुक्मिणि[6] कर जोर
पूजिय[7] गिरिजे शुभ यश लेहु
जगन्नाथ स्वामी मोहि देहु
नन्दीपति भन सुनू[8] सेआनि[9]
देथु[10] अभयवर सारंग पानि

मि० गी० सं० (भाग-२, गीत-४)

---

[१] अन्य पाठ

१. चलु चलु । ४. लसे । ५. कपूर । ६. रुक्मिनि । ७. पूजिअ । ८. सुनह । ९. सयानि । १०. देहु ।

अन्य पाठ सँ

२. 'गोपाल'क स्थान मे 'गोपाला' । ३. 'तीर'क स्थानमे 'तट' ।

२

महेशवानी

माला गाँथू हे गौरी
बम्भोला के[१] पहिरायब[२] माला गाँथू हे गौरी।
नहि घर हम सूत चरखा काटल नहि बाँटल हम डोरी।
पैँच उधार कहाँसँ लायब नहि घर दाम न कौरी।
एक सय[३] आठ रुद्र केर माला सौंसि[४] सर्पक डोरी।
निर्गुण बान्ह गेंठ[५] दस बान्हल नाग फणा केर भूरी।
माला गाँथि कयल तैयारी लय चलु शिवक दुआरी।[८]
पार्वती[९] पति थिकथि दिगम्बर[१०] देखि माल मुसकाइ।
मनहिँ[११] नन्दीपति सुनु ए मनाइनि इहो पद थिक निरवाणी।
जाति-पाति एको नहि हिनका तीन भुवन के दानी।

किशोरी कुमारी, घोघरडीहा

[२] विद्यापतिर शिवगीत : पृ० १५–१६, गीत २५ क पाठान्तर
१. के। २. पहिरावन। ३. सौ। ४. सउँसे। ५. बान्ह गेंठ। ६. बान्हल।
७. फेंचके। ८. दुआरी। ९. पारवती। १०. थिका शिवशङ्कर। ११. 'मनहिँ विद्यापति।' तथा पाद टिप्पणीमे देल गेल अछि 'मनहिँ नन्दीपति'...'इति पाठान्तर'।
हमरा अपना मायसँ ई गीत निम्नरूपमे भेटल :—

माला गाँथू हे गौरी
शिवशंकर के पहिरायोन माला गाँथू हे गौरी.
ने हम चरखा तुर सुत काटल ने हम बाँटल डोरी
किनका घर हम पैंच लय जायब ने अछि दाम ने कौड़ी
एक सय आठ रुद्र (मुंड) के माला सौंसे सर्पक डोरी
निर्गुण ब्रह्मा गेंठ ने देलनि नाग फेंच के भूड़ी
माला गाँथि तैयार हम कैलहुँ लय पहुँचाबथि गौरी
जाति-पाति एको नहि बूझल सगर नगर बुलि ऐली

३

उचिती

बड़ उँच हेमत पहाड़ रे
निकसल निरमल धार रे
तनिकहु गंगा नाम रे
जनिक न पाव[२] उपाम रे
पुरुखक एहने[३] वानि रे
[४]सेवल से हम जानि रे
से की होथि कठोर रे"
तम नहि करथि उजोर रे
कह कोविद अवधारि रे
सुपुरुख करथि[६] विचारि रे

दाइजी, खोजपुर दरभंगा

---

[३] —पाठान्तर : स्व० महेश्वरठाकुर, भीठ भगवानपुर, दरभंगा।
१. निकसलि : २. पाबिय। ३. एहन। ४. हुनि सेवल हम। ५. अनेक ठाम सातम आठम पदक अभाव भेटैछ। ६. कहथि।

४

उचिती

हम अबला अज्ञानि रे[1]
ससिक[2] सेवल हम[3] जानि रे
आज हमर बड़ भाग रे
एहन परस मनि पाव रे
डेङि बुरल[5] मझधार रे
लय[6] जहाज करु पार रे
सात खण्ड[7] कुसिआर रे
निकसल[8] प्रेम पिआर रे
कह 'बादरि' अवधारि रे
गुनमन्त जग[9] दुइ चारि रे

बुचनीदाइ, नवानी, दरभंगा

---

[४] सि० गी० सं० (भाग—१, गीत-५२), मि० म० (गीत ८७३)क पाठान्तर :—
१. निरजनि। २. शशि। ३. गुण। ५. डुबल (मि०म० डेङि डुबल)।
६. लै।

विशेष :: केवल चारि पंक्ति, प्रथम, दोसर, पाँचम ओ॰ छठम समान छैक। तेसर, चारिम तथा अन्तिम चारि पंक्ति नहि छैक। एकरा बदलामे तेसर—चारिमक बदलामे छैक—

हम सों अनेक कुरीति रे
सुपुरुष ने तेजै पिरीति रे

भनिता मे छैक—

भनहि विद्यापति भान रे
सुपुरुष बसथि सुठाम रे

सि० गी० स० (भाग-३, गीत-१४), मि० म० (गीत—६१८) मे एहि गीतक पाँचम छठम भेटैत छैक जाहिमे 'निकसल'क स्थानमे 'निकसय' छैक।

अन्य पाठान्तर

४. उपमा पाहुन पाव रे। ७. रस खण्डित। ८. निकसय। ९. जग।

५

उचिती

जँओं करु सुजन सिनेह रे
उपमा[1] पाहुन नेह रे
हेम कर[2] मण्डप हेम रे ; मनि[14] कादव लपटाए रे
चानन वन कत[3] नीम रे[4] ; तैओ ने[15] तकर[16] गुन[17] जाए रे
काग[5] कोइली एक भाँति[6] रे ; अलि काँ[18] कुसुम अनेक रे
भेम्ह[7] भमर एक[8] काँति[9] रे ; मालति कैं[19] अलि एक रे
हेम[10] हरदि कत[11] बीच रे ; कह 'बादरि' अवधारि[20] रे[21]
गुनहि चिन्ही[12] उच[13] नीच रे ; सुपुरुष जन दुइ चारि[22] रे

दाइजी, लोजपुर, दरभंगा

---

[५] i मि० गी० सं० (भाग-३, गीत-१३)क पाठान्तर :—
५. काक । ६. कांति । ८. दुइ । ९. भांति । १०. हिगु । १२. चिन्हल ।
१३. उँच । १४. मणि । १६. तनिक । १८. कँ । १९. के ।
विशेष : —पाँचम-छठम पंक्ति अन्तिम दुइ पंक्ति सँ पूर्व छैक ।
ii H. M. L. (Vol. I 422)क पाठान्तर :— गजहरा-हस्तलेखसँ ई गीत उद्धृत कयल गेल अछि । जाहिमे प्रथम चारि पंक्तिक अभाव छैक ।
११. कर । २०. बादरि कवि अवधारी ।
iii ग्रियर्सनक पाठान्तर :—
४. प्रथम चारि पंक्तिक स्थानपर निम्नलिखित पंक्ति छैक :—

बड़ जन जकर पीरीति रे
कोषहु न तजय रीति रे

एगारहम-बारहम पंक्ति छैके नहि । २१. भणिता मे विद्यापतिक नामयुक्त निम्नलिखित दुइ पंक्ति छैक—

विद्यापति अवधान रे
सुपुरुष न कर निदान रे

शेष छौ पंक्तिक पाठान्तर निम्नलिखित अछि—
५. काक । ६. जाति । ७. भेम । ९. भांति । १२. बुझिअ । १३. ऊच ।
१५. तैँ कि । १६. तनिक ।

६

उचिती

प्रथम समागम भेल रे
इठहि रइनि[1] बिति[2] गेल रे

नव तन[3] नव अनुराग रे । आब[9] ने जिउब[10] बिनु कन्त रे
बिनु परिचय[4] रस जाग[5] रे । बिरहे जीवक[11] अन्त रे
से सभ[6] पिय[7] तजि गेल रे । नन्दीपति कवि भान रे[12]
जौवन[8] उपगत भेल रे । सुपुरुष ने करय निदान रे[13]

मिथिला देवी, उसमा मठ, दरभंगा

मन्तव्य :—ग्रियसनक पद संख्या-४२ क अनुसरण करैत नगेन्द्रनाथगुप्त एहि पदकें विद्यापतिक पद मानि ४०८ संख्यक पद रूपमे रखलनि। श्रीविमान विहारी मजुमदार 'मैथिल-पोथी सँ प्राप्त पद' खण्डक अन्तर्गत उपर्युक्त दुहू महानुभावक अनुसरण करैत अविकल रूपमे एहि पदकें पद संख्या ४६५ मे स्थान देलनि।

iv अन्य पाठ :—

१. अनुपम। २. हेमहि। ३. की। १९. कीं। २२. सुपुरुष करथि विचारि रे।

[६] i. मि० गी० स० (भाग-३, गीत-२६)क पाठान्तर :—

१. रैनि। २. बीति। ३. तव तन। ४. परिच। ६. से सभ संग। ७. पिये।
८. यौवन। ११. आब की जीवन भेल।

ii. मै० लो० गी० (पृ० २५७)क पाठान्तर :—

१. रैनि। ६. से सब संग। ८. यौवन। ११. आब की जीवन भेल।

iii. ग्रियर्सन (पद संख्या-७१)क पाठान्तर :—

माँग सैसव पहु अव जीयब बिरहे जीव भेल
भनइ विद्यापति भान रे सुपुरुख गुनक निधान रे

नगेन्द्रनाथ गुप्त पदसंख्या ६६३ मे तथा विमान विहारी मजुमदार पद संख्या ४०६ मे एकरा विद्यापतिक नाम पर रखने छथि।

७

तिरहुति

सुन्दरि चललि शयन गृहि ना[1]
दश पाँच[2] सखि सब कर घरु ना
जइतहि लागु परम[3] डर ना
जैसे शशि कांप[4] राहु डर ना
हार टुटिय छिरियाय गेल ना[5]
भूषण बसन लोटाय[6] गेल ना[7]

रोय रोय कजरा दहाय गेल ना[8]
आदंकहि[9] सिंदुर मेटाय गेल[10] ना
नन्दीपति कवि भान[11] ना[12]
देख अहल[13] सुख पाओल ना[14]
(दुख सहिय सुख पाव ना)

मिथिला देवी, उसमा मठ, दरभंगा

---

[७] i मि० गी० सं० (भाग–२, गीत–३०)क पाठान्तर :—
२. चहु दिश। ४. जैसे शशि कापँ वा 'शशि यस कांपथि'। ९. अदंकहि। ११. भान।
ii मै० लो० गी० (पृ० २४४)क पाठान्तर :—
१. चललिह पहु घर ना। २. हँसि हँसि। ६. मलिन। ९. अदंकहि। १२. 'भानु नाथ' कवि धीर घरु ना।
iii ग्रियर्सन (गीत संख्या–२६)क पाठान्तर :—
१. चललिहु पहु घर ना। २. चहु दिस। ३. जाइतहु लागु परम। ५. जाइतहि हार टुटिए गेल ना। ६. मलिन। ८. रोए रोए काजर बहाए देल ना। ९. अवकहिँ। १०, देल। १२. भनइ विद्यापति गाओल ना। १३. दुख सहि सहि।
विशेष :—नगेन्द्र नाथ गुप्त अपन विद्यापति पदावलीमे पद संख्या १४७ रूपमे संकलित कय लेलनि, विमानविहारी मजुमदार एहि पदकेँ मिथिलासे प्राप्त सन्दिग्ध पदक रूपमे पद संख्या ८९६ मे संकलित कयलनि, तथा नन्दीपतिक गीत होयबाक सन्देह कयलनि।
iv दाइजी, खोजपुरक पाठान्तर :—
२. चौदिस सखि। ३. प्रेम। १०. मलिन भेल। ५. छुबितहि हार टुटिए गेल ना। ७. छुबितहि बसन हेरा गेल ना। १२. 'बुद्धिनाथ' कवि गाओल ना। १४. दुख छाडि सुख पाओल ना।
विशेष :—चारिम पंक्तिक बाद सातम–आठम पंक्ति छैक। गीतक पोथीमे 'बुद्धि नाथ' भणिता छलैक किन्तु गयबा कालमे 'बुद्धिलाल' नाम भणितामे छलैक।

८

तिरहुति

चललि शयन बर[१] सुन्दरि रे आनन अरविन्दा[२]
शिर सँ[३] ससरल घोघट रे जनि[४] उगल चन्दा
चलइत नूपुर कङ्कण[५] रे दुहु रव एक काले[६]
दुर सँ हंस सबद सुनि[७] रे जनि बोल मराले[८]
नाभि विवर सँ निकसल[९] रे रोमावलि सापे
से सौतिन बध कारक[१०] रे आँचर थर[११] झाँपे
उड़हु न जान चकेवा[१२] रे दुहु कुच उर[१३] छाजे
पवन परस उर अञ्चल[१४] रे जनि झपटल बाजे
नव परिचय नव कामिनि[१५] रे भूषण[१६] अनुरागे
कह अनुभव कवि[१७] बादरि रे सुनइत[१८] सुख लागे

मै० गी० र०, पृ०, ३२, गीत-५६

[८] विशेष :—मै० गी० र०मे निधि उपाध्यायक (जे जोरखन भाक नामान्तर कहल जाइछ) रचना कहल गेल अछि, यद्यपि भणितामे 'बादरि' छैक। टिप्पणी (पृ० १२९)मे उजानक बद्रीनाथ उपाध्यायक पूर्वज 'निधि' छलाह सेहो संभावना कयल गेल अछि।

i मि० गी० सं० (भाग-२, गीत-४२) क पाठान्तर :—
१. गृहि। २. आनन्द उरवृन्दा। ३. सों। ४. जानि। ५. किंकिनि। ६. दोरब दुहु काने। ७. दुर सौं हंस शब्द करु। ८. घर पिय जिवशाने। ९. सौं निकसलि। १०. कारन। ११. रहु। १२. उरहु ने जानि चकवा शिशु। १३. उर कुचयुग। १४. उर आंचर। १५. नागरि। १६. अभिनव। १७. करि। १८. देसैत बड़।
विशेष :—पाँचम-छठम पंक्ति सातम-आठम पंक्तिक बाद छैक।

ii मै० लो० गी० (पृ० २३६) क पाठान्तर :—
१. गृहि। २. आनन्द-उरवृन्दा। ५. किंकिनि। ६. पिक कल अलसाने। ७. हंस शब्द करु। ८. घर पिय जिवशाने। १२. उरहु न आन चकवा-शिशु रे। १३. उर कुच युग उर-आँचर। ९. निकसलि। १०. कारन। ११. रहु।
विशेष :—पाँचम-छठम पंक्ति सातम-आठम पंक्तिक बाद छैक। अन्तिम भणिता युक्त दुहू पाँतीक अभाव छैक।

६

तिरहुति

ना धरु ना धरु हे कर मोर कन्हाई
हम पर नागरि हे तोँ हेँ जादवराई
छीक पड़ल घर हे दधि चललहुँ बीकय
बाटहि झगड़ भेल हे जओं घलटब नीकय
[दधि-दुग्ध][1] गोरस निरस भेल हे नहि लेत गाहिकिनिआ
सासु ननदि घर [दारुन][2] हे मोरा कहत कहिनिआ
सखि अगुआइलि हे चन माँझ नहाए (ई)[3]
कि करब कानू (हे)[4] (हम)[5] तोहर बड़ाई
नन्दीपति कहु (हे सुनु)[6] कुमरकन्हाई
पार कइए दयह एहि-दह हे तोर नन्द दोहाई

दाइजी, सोजपुर, दरभंगा



विशेष :—ई पद सर्व प्रथम बेर प्रकाशमे आबि रहल अछि ।

१, २, छन्दक अनुरोधेँ अनपेक्षित अछि । ३, संशोधित । ४, ५, ६, मूलमे ई नहि छैक मुदा छन्दक अनुरोधेँ अपेक्षित अछि ।

१०

तिरहुति

माधव ई नहि उचित विचारे
जकर एहन धनि काम कला सनि से किए कर व्यभिचारे
प्राणहु ताहि अधिक छलि ये धनि हृदइक हार समाने
को परि आन कओन विधि ताकिय कि कहब तनिक गेआने
पढ़ल पुरुख भय सुरुप भेलाहु तोहैं सहजहि ई अरविन्दा
से सिनुआरि कुसुम तेजि सेविय सहजहि भम्हर मलिन्दा (?)
कृपण काँ केंओ नें भल कह इ अछि जग उपहासे
निय धन अछैत से नहि भोगथि केवल परहिक आसे
नन्दीपति भनिय रसिक जन की फल अधिक जनाइ
माङि आनिय विच तें जँ होंय नित अपन करिथ कथिलाइ

प्राचीन हस्तलेख सँ

[१०] प्रस्तुत पद विद्यापतिक नाम पर पूर्ण प्रचलित अछि। ग्रियर्सन, नगेन्द्रनाथगुप्त तथा विमानविहारीमजुमदार विद्यापतिक प्रामाणिक पद मानने छथि, किन्तु हमरा ई नन्दीपतिक भणितामे एक प्राचीन तिरहुता हस्तलेखमे उपर्युक्त रूपमे उपलब्ध भेल। ई हस्तलेख सम्प्रति प्रोफेसर डाक्टर शैलेन्द्रमोहनझा, मैथिली-विभाग, सी०एम्०कालेज, दरभंगाक लगमे सुरक्षित छनि। नीचाँ ग्रियर्सनक पाठ द' रहल छी जाहिमे अन्य भिन्न पाठक संग पाँचम-छठम पंक्तिक अभाव छक।

माधव ई नहि उचित विचारे
जनिक एहन धनि कामकला सनि ने किअ करु व्यभिचारे
प्रानहु ताहि अधिक कय मानब हृदयक हार समाने
कोन परियुक्ति आन कैं ताकब की थिक हुनक गेआने
कृपिन पुरुस कैं केओ नहि निक कह जगभरि कर उपहासे
निज धन अछइति नहि उपभोगब केवल परहिक आसे
भनहिँ विद्यापति सुनु मथुरा पति इ थिक अनुचित काजे
माँगि लायब वित से यदि होंय नित अपन करब कोन काजे

ग्रियर्सन,—५१, नगेन्द्रनाथगुप्त—३७७
वि०वि०मजुमदार—३८०

११

तिरहुति

माधव एहन दिवस भेल मोरा[1]
अपन करम[2] फल हम उपभोगव[3] ताहि[4] दोष कोन[5] तोरा
जाहि नगर चानन हनि चीन्हथि[6] अड़इ[7] आदर कए रोपे[8]
निगुन[9] बुझलैं जनिके[10] अनादर[11] उचित न तापर कोपे
सगुन पुरुख निरगुन नीनल जौं जीवन जड़ कैं देला
जौं करमी फुल सबहु सराहिए तौं कि कमल गुन भेला
थल गुन आन ठाम परगासल तैं की तनिक अभेला
गिरिदरि ताहि तिमिर रहु तापर रवि महिमा छिन भेला
जनिक सरसमन ताहि कहिए गुन पसु सिसु अबुध न बूझे
नन्दीपति मन तैं देखु दरपन आन्हर कौं की सूझे

T. V. H, I.V.

---

[११] मै० लो० गी० (पृ० २५६) ओ मि०गी०सं० (भाग-१, गीत-२३) क पाठान्तर
१. माधव की कहब कुदिवस मोरा। २. कर्म ३. उपभोगल ४. जाहि ५. नहि ६. चीन्है ७. अड़र ८. कै रोपै, ९. गुण १०. तनिक ११. तापर उचित न कोपै।

चारि पंक्तिक बाद मै० लो० गी० मे शेष पंक्ति निम्न रूपमे अछि :—

पढ़ल पुरुष यदि नयन गमाओल तैं नहि करिय अमेला।
जौं करमी फुल कौन सराहल तैं की कमल गुन भेला॥
सुधन पुरुष निरगुन जग निन्दल जड़कै गौरव बूझै।
नन्दीपति इहो मन दय बूझिय आन्हरकैं की दरपन सूझै॥

चारि पंक्तिक बाद मि० गी० सं० मे छैक

पढ़ल पुरुष थल दुख दुइ प्रकाश गमाओल तैं नहि करिय अमेला
जौं करमी फुल कौन सराहल तैं की कमल गुन भेला
सुजन पुरुष निरगुन जग निन्दल जड़कैं जीवन देल
गिरिवर ताहि त्रिवेणी वहु तापर रवि महिमा किए भेल
जनिका कनक परस होय सुशील पशु शिशु अबुझ की बूझे
'नन्दीपति' इहो मन दय बूझिय आन्हरकैं की दरपन सूझे

१२

बटगवनी

चन्द्र वदनि नवि[1] कामिनि सजनी[2] यामिनि अति अन्हियारि
सखि सङ्ग चलति केलिघर[3] सजनी कर-पल्लव[4] दिप[5] वारि
पवन झिकोर[6] जोर बह सजनी तेँ लेल अञ्चल झाँपि
देखि उरज अति उन्नत[8] सजनी दीप[9] रासि उठ काँपि
झप झप कए कत काँपए सजनी विलखि धुनए निज माथ[10]
कथि लए जनम देल मोर[11] सजनी चतुरानन विनु[12] हाथ
नन्दीपति कवि गाओल सजनी ई जग थीक कुमान[13]
परस उरज अति सुन्दर सजनी 'माधव सिंह' रस जान

मैं० गी० र०, पृ० ४४, गीत—७५

---

[१२] पाठान्तर :—

मि०गी०सं०(भाग-२, गीत ३७) ओ मै०लो०(पृ० २७२) :—१. नव, २. सजनी गे, ३, गृह, ४. पंकज, ५. दीप, ६. झकोर, ७. बरू, ८. सुन्दर (उपयुक्त पाठ मै० लो० सं०), मै० गी० र०—सुन्दर ९. (मै० गी० र०—तेँ ओ) १०. थप थप करत झुकत फेर सजनी गे, भाल धुन शिर माथ, ११. दैव जनम देल, १२. बिन, १३. अन्तिम उभय पंक्तिक अभाव छैक।

टिप्पणी :—*तारादेवी गोनौन, दरभंगा* सँ प्राप्त गीतमे अन्तिम दुनू पंक्ति छैक जाहिमे माधवसिंहक उल्लेख अछि। किन्तु हमरा सन्देह अछि जे ई गीत रत्नावली-एक अनुकृतिमे होअय। गीत रत्नावलीमे ई भनिता कतऽसँ उपलब्ध भेलनि तकर कोनो संकेत कविशेखर जी नहि देने छथि।

१३

बटगवनी

माङग[1] चाँह चिकुर भर[2] सजनी सहजहिँ दूबरि देह
प्रथमहि सुपहु[3] समागम सजनी उपजल[4] अधिक सन्देह[5]
दूरहि[6] सुतलि विमुखभए सजनी विरल बसने[7] मुख झाँपि
अभिनव केलिक नामहि[8] सजनी नहि नहि कए उठु[9] काँपि
नूपुर काढ़ि नराओल[10] सजनी हरल बसन अवशेष[11]
भाव भरल नव[12] नागर सजनी उनमत भेल विशेष[13]
नयन नीर[14] भरि बाजलि सजनी भल[15] शपथ[16]क निरवाह
पुरुष न जान नारि दुख[17] सजनी केवल निज[18] सुख चाह
आलस अलक बेयाकुल सजनी न रहलि निजवश नारि[19]
अति कौशल पहु परसल[20] सजनी एहि अवसर अवधारि[21]
धैरज धए रहु सुवदनि! सजनी इएह उचित एहि ठाम[22]
नन्दीपति बिनु साहस सजनी सुखद न होअ परिणाम

मै० गी०र०, पृ० ४३, गी०–७४

[१३] T. V. H., VI क पाठान्तर :—
३. पहु सँ ५. सोह ६. दुरनँ ७. बसन ९. उठि ११. अवसेखि १३. अति उनमत भेल देखि
१६. सपथक १७. नागर न बुझ नारि दुख १८. निअ १९. दुहु पंक्तिक अभाव छैक।
विशेष :—अन्तिम पुष्पिका निम्न लिखित रूपमे छैक —

नन्दीपति कवि गाओल सजनी येह उचित एहि ठाम।
साहस तह पुनु लहु थिक सजनी सुखद होयत परि नाम ॥

मि० गी० सं० (भाग-१, गीत १६) क पाठान्तर ;
१. भागहि २. भेल ३. पहुक ४. बाढ़ल ६. दुरिभय ७. विरह बसन ८. नामे ९. उठि
१०. नेराओल १३. भेल १४. नीर १६. सपथ अपन १२. छल १३. अति उन्मति 'त्त' भेल
देष १९. दुहु पंक्तिक अभाव छैक।
२१. अन्तिम दुहु पंक्तिक स्थानमे विद्यापतिक भनिता युक्त निम्न दुइ पंक्ति छैक।

भनहि विद्यापति गाओल स० क्यो जनु नेह लगाव।
भाव एकर हम की कहब स० जे सुन से दुख-पाव ॥

विशेष :—पाँचम ओ छठम पंक्ति मि० गी० सं० मे सातम-आठम केर बाद छैक।
मन्तव्य— मै० गी० र० केर उपर्युक्त पाठमे–२०. 'पसरल सँ' 'परसल' संशोधित पाठ।

१४

बटगवनी

की कहु पहु परदेश गेल सजनी गे
की कहु किछु ने सोहाय
फूजल केश नीर बहु सजनी गे
काजर गेल दहाय
चूड़ी बसन भार भेल सजनी गे
भेल यौवन अति भार
आङन मोरा लेखे बिजुवन सजनी गे
भर भेल दिवस अन्हार
हरि बिनु सेज सन भेल सजनी गे
गेल्हा मोहि ने सोहाय
जौं नहि प्रीतम अओताह सजनी गे
मरब जहर विष खाय
नन्दीपति मन मन दय सजनी गे
मन जनु करिय उदास
तकर कतेक अभिलाखब सजनी गे
देलन्हि बहु विश्वास

मि० गी० सं०, भाग-४, गीत-५

[१४] विशेष :— H.M.L. Vol I.P. 418, f.n. 56 [c] मे कहल गेल अछि जे ई गीत हुनक नाटको मे छनि, किन्तु नाटक पे ई गीत छैक नहि।

i. म० ली० गी० मे कतिपय पंक्तिक साम्य युक्त गीत छैक :—

एते दिन भँवरा हमर छल सजनी गे
जाव गेल मोरंग देश
मधुपुर पिबहु लोभायल सजनी गे
मोरा किछु कहियो ने गेल

आगन लागए विषम सुन सजनी गे
घर भेल विषम अन्हार
फूजल केश अभेल भेल सजनी गे
गेरुआ मोरो ने सोहाय
आजु पिया नहि आवत सजनी गे
मरब जहर विष खाय

पृ० २८५–८६, वटगवनी गीतसं०–२१

ii. वरक उदासीक एक गीतसँ साम्य छैक—

जाहि दिन पिया परदेस भेल सजनी गे
ताहि दिन किछु ने सोहेल
आङन मोरा लेखें विजुवन सजनी गे
घर लागे दिवस अन्हार
सूतक सेज अगिन सन सजनी गे
गेरुआ मोहि ने सोहाय
खूजल केश गिर भेल सजनी गे
नयन काजर गेल बहाय
पुरुख वचन निफल भेल सजनी गे
सपतक ने परमान

—गाइनि
१. कृपाल दाइ २. कुसुम सुन्नरि
ग्राम सहोड़ा, पो० आनन्दपुर, दरभंगा।

iii. एकटा आरो गीत सँ तुलनीय अछि—

एते दिन भमरा हमर छल गे सजनी
आइ गेल सारक देस
मधु पिबि भमरा लोभित भेल सजनी गे
मोहि किछु कहियो ने गेल
सिन्दुर बिन्दुल मोहि ने सोहाय
बहु बिनु सुन भेल लाली पलङिया
गेरुआ मोहि न सोहाय
पुरुखक जाति अपन नहि सजनी गे
मरब जहर विष खाय

—गाइनि
ललिम सुन्नरि (संका)
ग्राम सहोड़ा, पो० आनन्दपुर, दरभंगा।

१५

मलारी

चललो[१] मधुपुर[२] साजि रे दधि बेचन बाला
यमुना निकट तट जाय रे रोकय[३] नन्दलाला
मुख अंचर[४] पट ओत[५] रे रभसि हँसु भामा[६]
पुलकि[७] पुरल तनु देह[८] रे देखि सुन्दर श्यामा
मुरली अधर विराज रे सुन्दर सुख[९] रासी
मन मोरा[१०] हरल गोपाल रे गोकुल के[११] वासी
जाय देवन्हि[१२] उपराग रे यशोदा[१३] महारानी
तोर पुत[१४] हटलो ने[१५] मान रे लटय गालबि(?)रानी[१६]
नन्दीपति मन नेह[१७] रे सुनु गोप गोआरी[१८]
तोहि छाड़ि भजहि ने आन रे[१९] नोखे गिरधारी

दाइजी, लोजपुर, दरभंगा

---

[१५] मै० गी० र० क पाठान्तर, गीत संख्या–७०

१. चललि २. मधुपुर ३. रोकल ४. अन्चल ५. ओट ६. दए विहुँसलि बामा ७. पुलक ८. तन नेह ९. मुख १०. मोर ११. केर १२. जाए देब १३. यशोमति १४. 'तोर पुत' क स्थानमे 'हरि' १५. नहि १६. लुट माल बिरानी १७. गौरीपति कवि भान रे १८. कुमारि १९. सब तेजि भजिअ मुरारि रे।

विशेष :— छठम पंक्तिक बाद दुइ पंक्ति आरो छैक—

करब कओन परकार रे सोचए ब्रजबाला।
पड़ल कुन्ज वन साँझ रे वैरी भेल काला।।

भणिता मे 'गौरीपति' छैक।

१६

ग्वालरी

जसुमति सुत[१] मुरारी ना
सखि हे लेलन्हि जमुना घटवारी ना
चलली दहि[२] दुध बेचय[३] ना
सखि हे संग दोसर नहि थिक ना
कत कत कयल निहोर ना
सखि हे नहि बुझ परम कठोर ना
आयल[४] जमुन[५] जल बाढ़ी ना
सखि हे भेलहु कदम तर ठाढ़ी ना
बाट भेटिअ[६] गेल कान्ह ना
सखि हे ओही वृन्दावन माझ ना
नन्दीपति कवि भान ना
सखि हे नन्द तनय रस जान ना[८]

स्व० महेश्वर ठाकुर,
भीठ भगवानपुर, दरभंगा

---

[१६] मि० गी० सं० [चतुर्थ भाग, पृ० ६, गीत–७] क पाठान्तर :—
१. यशोमति सुत २. दधी ३. बेचन ४ अयलो ५. जमुना ६. भेटिय ७. भनहि विद्यापति ८. एही प्रकारक वाक्यांशक हेतु देखू कृ०के०गा० पृ० १९, २८, ३०, ३९, ४०

१७

अम्बर धैल[1] उतारी
से लै[2] कदम[3] चढ़ल मुरारी
अभरन[4] एक बरु लेह[5]
हरि परिधार[6] वसन मोर देह[7]
सबहिं[8] सखी घर जाये[9]
हम किये एतेखन बिलमाये[10]
हमहि[11] बुझिय[12] तोर भावे
से मन बासी[13] करह हरि आवे[14]
मोरा[15] मुख अबइत[16] आगी
नेह करह हरि अतेवे री लागी[17]
नन्दीपति कवि गावे[18]
नन्द तनय रस बूझ आवे[19]

मि० गी० सं० (भाग-४, गीत-१२)

❀

---

[१७] कृष्ण केलिमाला (तृतीय अंक, पृ० २८)क पाठान्तर

१. धएल २. लए ३. कदमतक ४. अभरण ५. लैह ६. परिधान ७. देहे ८. सबहुँ ९. पट पाऊँ १०. हमरहि किए एतिखन बिलमाऊ ११. हमहुँ १२. बुझिए १३. वासि १४. आवे १५. मुख १६. अबइछ १७. तोहउँ करह हरि तन(त) वहि लागी १८. गावे १९. रसमय बुझ भावे।

विशेष : -नवम-दसम पंक्ति सातम-आठम सँ पूर्व छैक। छठम पंक्तिक बाद निम्न लिखित चारिपंक्ति आओरो छैक—

एति कौतुक किए तोही
कारण कओन कहह दुहु मोही
कीए तोहें पारह गारी
हमें न तोहर हरि सरहोज सारी

अन्य पाठान्तर

३. कदमहि ६. परिहन (पहिरन) १३. वासि १५ मोर १६. आवय १७. एतबए लागी।

१८

मान

[१]आब उचित नहि मान[२] ॥ध्रु०॥
एतनुक रीति[३] हम जेहन[४] देखै[५] छा[६] जागल पै[७] पचवान[८]
कुसुमा[९] रचित सेज दीपक[१०] देखि थिर नहि रहय[११] गेआन[१२]
तखनुक धरज धरय न पारि (र) अ[१३] सुनि सुनि पिक निक गान
जुड़ि[१४] रैनि[१५] चकमक[१६] कर[१७] चानिनि[१८] एहन समय नहि आन
एहन समय[१९] पहु मिलन जेहन थिक[२०] जकरहि हो[२१] से जान
त्रिवलि तरङ्ग शिता शित[२२] संगम उरज[२३] शम्भु[२४] निरमान[२५]
आरति पहु[२६] प्रतिग्रह[२७] मङ्गइछ[२८] करू घनि सर्व्वस दान[२९]
कुसुम कुसुम कत विलसि विलासिनि[३०] अलि मालति करू मधुपान[३१]
अपन अपन पहु सबहु[३२] जेमाओल भूखल तोर मेजमान[३३]
हम कि कहब सखि तोहें कमलमुखि अपनहि करु समधान[३४]
सञ्चित मदन वेदन अति[३५] दारुण[३६] नन्दीपति[३७] कवि भान

कृष्णकेलि माला तृतीय अङ्क पृ० ६२

---

[१८] मि० गी० सं० क पाठान्तर

२. गे रमणी (अधिक छैक) ३. ऋतु ४. एहन ५. देखैत ९. कुसुम १०. दीप दीपक ११. रहत १५. रजनि १६. ई शब्द नहि छैक १७. करु १८. चानन १९. एहि अवसर २०. सुख २१. जकरे होइ २३. उर २५. निर्म्मान २६. रति २८. मङ्गै छी २९. कर धनि सर्वसु दान ३१. हरखि हरखि अलि बिलसि बिलसि धनि करह अधर मधुपान ३२. सबहि ३३. जमाओल भूखल तुअ यजमान ३५. तन।

विशेष :—चारिम ओ एगारहम पंक्तिक अभाव छैक। तेसर पंक्ति मि० गी० सं० मे दसम पंक्तिक बाद छैक।

ग्रियर्सन क पाठान्तर :—

१. मानिनि (प्रारम्भ होइत छैक) ३-६. रंग एहन सन लगइछ ७. पय ८. पचोवान ९-१२. दीप दिपक देखि थिर न रहय मन, दृढ़ करु अपन गेआन १४. जुड़ि १५ रमनि

१८. चानन १९. एहि अवसर २०. सुख २१. होए २२. सितासित २४. सम्भु २६. पति २७. परतिग्रह २८. मगइछ २९. सरवस दान ३१. रभसि रभसि अलि विलसि-विलसि करि जेकर अधर मधुपान ३३. जेमाओलि भूलल तुअ जजमान ३७ विद्यापति ।

विशेष :—एहुमे मि० गी० सं० जकाँ चारिम ओ एगारहम पंक्तिक अभाव छैक । पाँचम-छठम पंक्तिक बाद नवम-दशम पंक्ति देल गेल छैक । तेसर पंक्ति आठम पंक्तिक बाद अयलैक अछि । भणितामे विद्यापतिक नाम छनि । ग्रियर्सनक पद संख्या-५० केर अनुसरण करैत नगेन्द्र नाथ गुप्त पद संख्या ४१२ मे तथा विमान बिहारी मजुमदार पद संख्या ४८२ मे निस्संकोच भावेँ विद्यापतिक पद मानि लेलनि । मि० गी० सं० भाग–१, गीत सं० ५९, पृ० ४० मे स्पष्टतः 'नन्दीपति' भणिता अछि । यैह गीत उपर्युक्त रूपमे 'नन्दीपति' भणिता सँ युक्त, हुनक कृष्णकेलि माला नाटकक तृतीय अंक (पृ० ६३) मे राधिकाक मान तोड़बाक हेतु सखि विशालाक्षीसँ गबाओल गेल अछि । अतः निस्सन्देह ई गीत विद्यापतिक नहि, नन्दीपतिक थिकनि ।

पाठ शुद्धि :—

१०. छन्दानुरोधेँ 'दीपक' क बाद दुइ मात्रा अपेक्षित तेँ 'दिप' वा 'सिख' देल जा सकैछ १३. 'पाविअ' केँ 'पारिअ' सेहो पढ़ल जा सकैछ २२. सितासित ३०. 'विलासिनि'केँ छन्दानुरोधेँ 'विलसि' क' देल जाय वा 'अलि' केँ हटा देल जाय ।

१९

तिरहुति

[१]कओने अवगुन[२] पहु[३] तेजलन्हि हमरा[४]
पर रे रमनि रस लुबुधल भमरा[५]
निज करु निन्द परस निन्द गेल[६]
निन्दक[७] भरम भेल पहुक[८] सन्देह[९]
ओहि[१०] अवसर हम उठलहुँ जागी[११]
हरि हरि कहैत[१२] परम दुख भागी[१३]
पिया पिया करैत[१४] पयोधर भारी[१५]
कतेक[१६] दिन नयन बहत[१७] जलधारी[१८]
ककरि[१९] रमनि थिकहुँ कहु गे ताही[२०]
देखलहुँ[२१] तोर[२२] धनि विरह[२३] बताही
कवि बादरि ई थिकनि सन्देह[२४]
जतेक[२५] विरह होन्हि ततेक सनेह[२६]

दाइजी, खोजपुर, दरभंगा

---

[१९] कु० के० मा० (अंक-२ पृ० ६९) क पाठान्तर :—

१. की जनि २. दोखे ३. (नहि छैक) ४. मोरा ५. भम्हरा ६. निजकर परसि······ (खण्डित) ७. निनक ८. पिआक ९. सन्देहा १०. तेहि ११. उठिलहुँ जागि १२. भैलहुँ १३. भागि १४. हेरि हेरि पीन १५. भारे १६. कत १७. तेजब नयन १८. धारे १९. ककर २०. रमणि हम कहिहह ताही २१. देखलि २२. तोहर २३. बिकल २४. नन्दीपति कह तखनुक नेहा २५. जेहन २६. हो तेहन सिनेहा ।

विशेष :—आठ पंक्तिक बाद चारि पंक्ति आओर छैक :—

उपवन उपगत दक्षिन समीरे
किन्हुँ होएत पुर परसि शरीरे
मन छल सुपहु होएत सुख दाता
नव परिचय नव विरह विधाता

२०

जसोमति[१] मोर उपरागे । हरिक चरित[२] मोहि[३] बड़ मन्द लागे
जाइत जमुना पथ आजे । वन सँ[४] बाहर भेल जुवराजे[५]
आँचर धएलन्हि[६] मोरा । काल्हुक जनमल तोहर किशोरा[७]
तखनुक तसु व्यवहारे[८] । आब कि[९] कहब हम अपन कपारे[१०]
कोर सुतल तोर कान्हे । तैं जनु बूझह[११] हरि छथि नान्हे
एतय[१२] करथि तन[१३] पाने । ओतय कटै छथि तरुनक[१४] काने
नन्दीपति कवि गाई[१५] । जननि जसोमति[१६] नहि पति आई

T. V. H. VI

---

[२०] कृ० के० मा० (पृ० २६) क पाठान्तर :—

१. यशोमति २. चरित्र ३. माइ ४. बन सौं ५. यदुराजे ६. धयलन्हि ७. तोर किशोरा ८. बेवहारे ९. सेकी ११. जानह १२. एतहु १३. थन १४. तरुणक १५. कहहु सखी गण मन लाई १६. यशोमति

टिप्पणी :—प्रस्तुत सातम-आठम युग्मक पाँती एहिमे पहिल युग्मक पाँतीक बाद छैक। अन्तिम पाँतीसँ पूर्व एक युग्मक पंक्ति और छैक :—

पूछह सखी सेआनी, नहि परमान होइत मोर बानी ।।

अन्तमे भनिता युक्त युग्मक पंक्ति छैक : —

नन्दीपति कवि अवधारी, कृष्ण चरित्र राम छकित गोआरी ।।

मैथिली पद्य संग्रह (पृ० २५-२६) क पाठान्तर :—

३. माइ ४. बनसञो ५. यदुराजे ७. तोर किसोरा ८. बेवहारे १०. कपाड़े ११. जानह १२ एतए १३. थन १४. तरुनक १५. कहु को किद मन लाई ।

टिप्पणी —कृष्णकेलि माला जकाँ एहूमे सातम आठम युग्मक पाँती पहिल युग्मक पंक्तिक बाद छैक। अन्तिम युग्मक पंक्तिसँ पहिने एहूमे युग्मक पंक्ति छैक —

पूछह सकललि आनी । तेहि परमान छोड़त मोर बानी ।।

भनितामे 'कोविद' छैक । कृष्णकेलि माला जकाँ अतिरिक्त पंक्ति नहि छैक।

२१

हरि हे अति आकुल मन मोरा
कतेक सहब दुख कौतुक तोरा
एहि जमुना जल कतहु न थाहे
लए अिसहार पार लए जाहे
चहुदिस घन बुन्द बरिसए मेहा
अब कि करब सखि जिबहु सन्देहा
झाँझरि नाव टुटल करुआरे
कोन परि उतरब एहो भव पारे
सब सखि मिलि बैसलि हिया हारी
बिनु पुरुख पथ न चढ़िए नारी
नन्दीपति जल वीचि अपार
डगमग नैया करु माँझहि धार

T. V. H. V. II

---

[२१] कु० के० मा० (पृ० ४५) क पाठान्तर :—

दुनूमे ततेक अन्तर छैक जे सौंसे गीति उद्धृत कए देब उचित होयत।

हरि हे अति आकुल मन मोरा ०
कतेक सहब हमें कौतुक तोरा ॥
फूटलि नाओ टूटल करुआरे ०
कोने परि हमे धनि उतरब पारे
एहि जमुना जल कतहु न थाहे ०
देब गुनहार पार लए जाहे ॥
घने बुन्द बारिस दसहु दिशि मेहा ०
आबे अधिक भेल जीव सन्देहा ॥
सबहु सखी मिलि हलु हिया हारी ०
बिनु रे पुरुख पथ जनु चहु नारी ॥
नन्दीपति कल्लोन उपाइ ०
डगमग नाओ करए अछि माई ॥

अंगरेजी पोथी

१३.	History of Maithili Literature Vol I, 1949	Dr. Jaikant Mishra	Tirbhukti Allahabad–2	H. M. L.
१४.	History of Tirhut, 1922	Shyam Narayan Singh, M. B. E, Ray Bahadur	The Baptist Mission Press, Calcutta	
१५.	Maithili Chrestomathy 1880 (Journal of the Assiatic Society of Bengal Extra number I)	G. A. Grierson, I. C. S.		ग्रियर्सन
१६.	Proceedings of All India Orienlal Conference XII			
१७.	Twenty-one Vaishnav Hymns, 1884 (Journal of the Assiatic Society of Bengal I)	G. A. Grierson I. C. S.		T. V. H.

हिन्दी पोथी

१८.	हिन्दी साहित्य और विहार (द्वितीय खण्ड), १९६३	आचार्य शिवपूजनसहाय	विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

